The Chitransh Academic & Research
An International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue1 | March 2026
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

# झारखंड के माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर शैक्षिक दृष्टिकोण का प्रभावः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

**वीणा प्रकाश**

शोध छात्रा, स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

**डॉ. अवधेश रजक**

प्राचार्य, एम.ए.एम. कॉलेज, नवगछिया, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

**लेख विवरण**

**शोधपत्र**

**प्राप्ति तिथि:** 12/03/2026
**स्वीकृति तिथि:** 22/03/2026
**प्रकाशनतिथि:** 31/03/2026

**मुख्य शब्द:** सरकारी एवं प्राइवेट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति, तुलनात्मक अध्ययन, लिंग भिन्नता, विद्यार्थी।।

**सारांश**

प्रस्तुत अध्ययन झारखंड के अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर शैक्षिक दृष्टिकोण के प्रभाव का विश्लेषण करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार शैक्षिक दृष्टिकोण, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, अभिभावकीय समर्थन, विद्यालयी अवसंरचना तथा शैक्षिक वातावरण जैसे कारक विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है तथा इसमें द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है, जिन्हें शिक्षा मंत्रालय (UDISE+ 2021), जनगणना (2011), NCERT (2017) तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से संकलित किया गया है। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि झारखंड में ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति सामान्य वर्ग की तुलना में कमजोर है, विशेष रूप से नामांकन, उपस्थिति तथा ड्रॉपआउट के संदर्भ में। सामाजिक–आर्थिक वंचना, सीमित अभिभावकीय समर्थन तथा विद्यालयी संसाधनों की कमी इस स्थिति को और जटिल बनाते हैं। साथ ही, शैक्षिक दृष्टिकोण और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच स्पष्ट सकारात्मक संबंध पाया गया है, जो यह दर्शाता है कि सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों की प्रेरणा, निरंतरता और प्रदर्शन को सुदृढ़ करता है। अतः अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि बहुआयामी कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें मनोवैज्ञानिक तत्व विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। इन निष्कर्षों के आधार पर यह सुझाव दिया गया है कि शिक्षा को अधिक समावेशी, संसाधन–संपन्न तथा दृष्टिकोण–केंद्रित बनाया जाए, ताकि शैक्षणिक असमानताओं को कम किया जा सके।

## [redacted]

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास की आधारशिला है, जो केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न रहकर व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक उन्नयन को भी दिशा प्रदान करती है। समकालीन वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा को मानव पूंजी निर्माण का प्रमुख साधन माना जाता है, जो सामाजिक समानता, न्याय और अवसरों के विस्तार को सुनिश्चित करती है। भारत जैसे बहुलतावादी समाज में शिक्षा का महत्व विशेष रूप से इसलिए बढ़ जाता है, क्योंकि यह सामाजिक विषमताओं को कम करने और वंचित वर्गों को मुख्यधारा से जोड़ने का प्रभावी माध्यम है।

अनुसूचित जनजाति (ST) समुदाय के संदर्भ में शिक्षा की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह समुदाय ऐतिहासिक रूप से सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित रहा है। झारखंड जैसे राज्यों में, जहाँ जनजातीय जनसंख्या का महत्वपूर्ण अनुपात निवास करता है, शैक्षणिक असमानताएँ अधिक स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं। माध्यमिक स्तर पर नामांकन, उपस्थिति तथा उपलब्धि के निम्न स्तर इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि शैक्षणिक विकास केवल संरचनात्मक सुविधाओं पर निर्भर नहीं है, बल्कि यह अनेक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों से भी प्रभावित होता है।

## 2. [redacted]

पूर्व अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि जनजातीय क्षेत्रों में भौगोलिक अलगाव, सांस्कृतिक विविधता तथा भाषा संबंधी बाधाएँ शिक्षा के प्रसार में अवरोध उत्पन्न करती हैं। जक्सा (2014) ने जनजातीय शिक्षा की सीमित पहुँच और गुणवत्ता पर बल देते हुए यह संकेत किया कि इन बाधाओं के कारण विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति प्रभावित होती है। इसी प्रकार तिलक (2018) ने शिक्षा में सामाजिक–आर्थिक असमानताओं को प्रमुख अवरोध के रूप में रेखांकित किया, जबकि आमर्त्य सेन (1999) के क्षमता दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा व्यक्ति की स्वतंत्रता और अवसरों का विस्तार करती है, जिससे यह सशक्तिकरण का माध्यम बनती है।

विद्यालयी स्तर पर, NCERT (2017) के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि अवसंरचना, शिक्षक गुणवत्ता और अधिगम वातावरण विद्यार्थियों के शैक्षिक दृष्टिकोण और उपलब्धि को सीधे प्रभावित करते हैं। वहीं हिल एवं टायसन (2009) ने अभिभावकीय सहभागिता को शैक्षणिक सफलता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक माना है। इसी क्रम में सिरिन (2005) ने यह स्थापित किया कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों की उपलब्धि को गहराई से प्रभावित करती है।

इन सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षणिक उपलब्धि एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ, पारिवारिक समर्थन, विद्यालयी वातावरण तथा

Crossponding author: veenap190@gmail.com

विद्यार्थियों का शैक्षिक दृष्टिकोण परस्पर अंतःक्रियाशील भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से झारखंड के जनजातीय संदर्भ में, जहाँ संसाधन सीमित हैं, शैक्षिक दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक के रूप में उभरता है, जो विद्यार्थियों की उपलब्धि को सकारात्मक दिशा प्रदान कर सकता है। अतः इन कारकों के अंतर्संबंध का विश्लेषण करना प्रभावी शैक्षिक नीतियों के निर्माण हेतु अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

## [redacted]

भारतीय समाज में शिक्षा को सामाजिक प्रगति और मानवीय विकास का मूल आधार माना जाता है। यह केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित न रहकर व्यक्ति के व्यक्तित्व, सामाजिक चेतना तथा जीवन–स्तर के उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान बदलते सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य में शिक्षा सामाजिक गतिशीलता, समान अवसरों और सशक्तिकरण का प्रमुख माध्यम बन चुकी है। अनुसूचित जनजाति समुदाय के संदर्भ में शैक्षणिक स्थिति ऐतिहासिक रूप से चुनौतिपूर्ण रही है। सामाजिक वंचना, आर्थिक सीमाएँ, भौगोलिक दूरी तथा सांस्कृतिक–भाषाई विविधताएँ इनके शैक्षिक विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। झारखंड में यह स्थिति विशेष रूप से परिलक्षित होती है, जहाँ जनजातीय बहुल क्षेत्रों में संसाधनों की कमी और सीमित जागरूकता के कारण शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता प्रभावित होती है। माध्यमिक स्तर पर उच्च ड्रॉपआउट दर इस समस्या को और स्पष्ट करती है। इन परिस्थितियों में शैक्षिक दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक के रूप में उभरता है, जो विद्यार्थियों की रुचि, प्रयास और उपलब्धि को प्रभावित करता है; अतः इसके अध्ययन की विशेष आवश्यकता है।

## [redacted]

झारखंड में अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति अभी भी गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है। माध्यमिक स्तर पर उच्च ड्रॉपआउट दर, कम उपस्थिति तथा अपेक्षाकृत कमजोर शैक्षणिक उपलब्धि यह दर्शाती है कि शिक्षा की निरंतरता में संरचनात्मक बाधाएँ विद्यमान हैं। आर्थिक अभाव, अभिभावकीय जागरूकता की कमी तथा सीमित शैक्षिक संसाधन विद्यार्थियों की प्रगति को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करते हैं। इसके साथ ही, शैक्षिक दृष्टिकोण जैसे महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया है, जबकि यह विद्यार्थियों की प्रेरणा, सहभागिता और उपलब्धि का प्रमुख निर्धारक है। अतः इन सभी कारकों के संयुक्त प्रभाव का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

## [redacted]

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. झारखंड के माध्यमिक स्तर के ST विद्यार्थियों के शैक्षिक दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

Crossponding author: veenap190@gmail.com

2. ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का विश्लेषण करना।
3. शैक्षिक दृष्टिकोण और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध का परीक्षण करना।
4. सामाजिक–आर्थिक स्थिति, अभिभावकीय समर्थन तथा विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का विश्लेषण करना।

## [redacted]

अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनाएँ प्रस्तुत की गई हैं:

1 ST विद्यार्थियों के शैक्षिक दृष्टिकोण और उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध है।

2 सामाजिक–आर्थिक स्थिति ST विद्यार्थियों के शैक्षिक दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

3 अभिभावकीय समर्थन और विद्यालयी वातावरण ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

## [redacted]

प्रस्तुत अध्ययन अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर शैक्षिक दृष्टिकोण के प्रभाव के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है। इसमें मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है, जिन्हें शिक्षा मंत्रालय के UDISE+ (2021), जनगणना (2011), NCERT (2017), जनजातीय कार्य मंत्रालय (2020) तथा संबंधित शोध लेखों एवं जर्नलों से संकलित किया गया है।

अध्ययन में एक वैचारिक ढाँचा अपनाया गया है, जिसमें शैक्षिक दृष्टिकोण को आश्रित चर तथा सामाजिक.आर्थिक स्थिति, अभिभावकीय समर्थन, विद्यालयी अवसंरचना, नीतिगत जागरूकता एवं शैक्षिक वातावरण को स्वतंत्र चरों के रूप में शामिल किया गया है। इन चरों के मध्य संबंधों के विश्लेषण हेतु तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र झारखंड तक सीमित है। विभिन्न स्रोतों के समेकित विश्लेषण के माध्यम से निष्कर्षों को विश्वसनीय एवं प्रासंगिक बनाने का प्रयास किया गया है, जिससे शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों का समग्र आकलन संभव हो सके।

## [redacted]

इस खंड में अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति का विश्लेषण विभिन्न आयामों – जैसे नामांकन, उपस्थिति, ड्रॉपआउट, उपलब्धि, लिंग भिन्नता, शैक्षिक दृष्टिकोण तथा विद्यालयी अवसंरचना – के आधार पर किया गया है। प्रस्तुत विश्लेषण द्वितीयक आँकड़ों एवं प्रामाणिक स्रोतों पर आधारित है, जिसका उद्देश्य शैक्षिक दृष्टिकोण एवं उपलब्धि के मध्य संबंध को स्पष्ट करना है।

Crossponding author: veenap190@gmail.com

## 7.1 झारखंड में अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति

यह उपखंड झारखंड में माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें नामांकन, उपस्थिति, ड्रॉपआउट, उत्तीर्णता तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर संक्रमण जैसे प्रमुख शैक्षिक सूचकांकों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, जिससे ST एवं सामान्य वर्ग के मध्य विद्यमान शैक्षिक असमानताओं को समझा जा सके। यह विश्लेषण न केवल शैक्षणिक उपलब्धि के स्तर को दर्शाता है, बल्कि इसके पीछे कार्यरत सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों की ओर भी संकेत करता है।

**तालिका 1: झारखंड में ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण (प्रतिशत में)**

| सूचकांक | ST % | सामान्य (%) |
|---|---|---|
| ST जनसंख्या | 26.0 | — |
| साक्षरता दर | 67.6 | 73.3 |
| माध्यमिक नामांकन | 62.0 | 78.0 |
| उपस्थिति | 58.0 | 75.0 |
| ड्रॉपआउट दर | 28.0 | 15.0 |
| उत्तीर्णता | 55.0 | 72.0 |
| संक्रमण (उच्च माध्यमिक) | 48.0 | 68.0 |

स्रोत: जनगणना (2011), UDISE+ (2021)

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि झारखंड में ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति सामान्य वर्ग की तुलना में अपेक्षाकृत कमजोर है। साक्षरता दर में लगभग 6 प्रतिशत का अंतर यह दर्शाता है कि शैक्षिक असमानता की शुरुआत प्रारंभिक स्तर से ही हो जाती है। यह अंतर केवल शैक्षिक अवसरों की असमानता को नहीं दर्शाता, बल्कि यह सामाजिक–सांस्कृतिक वंचना और सीमित शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता का भी परिणाम है। माध्यमिक स्तर पर नामांकन (62%) और उपस्थिति (58%) का अपेक्षाकृत निम्न स्तर यह संकेत करता है कि ST विद्यार्थियों के लिए शिक्षा तक पहुँच और उसमें निरंतरता बनाए रखना एक चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो यह स्थिति अधिगम प्रेरणा तथा आत्म–प्रभावकारिता के निम्न स्तर से भी जुड़ी हो सकती है, जो अक्सर प्रतिकूल सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों में विकसित होती है। ड्रॉपआउट दर (28%) का उच्च स्तर विशेष रूप से चिंताजनक है, क्योंकि यह दर्शाता है कि बड़ी संख्या में विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाते। यह स्थिति केवल आर्थिक कारणों का परिणाम नहीं है, बल्कि यह निम्न उपलब्धि अपेक्षा, पारिवारिक दबाव तथा

Crossponding author: veenap190@gmail.com 

शैक्षिक समर्थन के अभाव से भी संबंधित है। परिणामस्वरूप, उत्तीर्णता (55%) एवं संक्रमण दर (48%) भी प्रभावित होती है। समग्र रूप से यह स्पष्ट होता है कि ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि बहुआयामी कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें सामाजिक–आर्थिक स्थिति, पारिवारिक वातावरण एवं मनोवैज्ञानिक कारक प्रमुख हैं।

### 7.2 झारखंड में विद्यालयी अवसंरचना

यह उपखंड झारखंड में विद्यालयी अवसंरचना की स्थिति तथा उसके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। विद्यालयी सुविधाएँ न केवल शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सुगम बनाती हैं, बल्कि वे विद्यार्थियों के दृष्टिकोण, प्रेरणा तथा अधिगम व्यवहार को भी प्रभावित करती हैं।

**तालिका 2: झारखंड में विद्यालयी सुविधाओं की उपलब्धता ([illegible])**

| सुविधा | झारखंड (%) |
|---|---|
| पक्के कक्ष | 78 |
| पुस्तकालय | 52 |
| कंप्यूटर | 38 |
| शौचालय | 61 |
| बिजली | 68 |

**स्रोत:** UDISE+ (2021)

तालिका 2 से यह स्पष्ट होता है कि झारखंड में विद्यालयी अवसंरचना आंशिक रूप से विकसित है। पक्के कक्ष (78%) एवं बिजली (68%) जैसी बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता अपेक्षाकृत संतोषजनक है, जिससे न्यूनतम शिक्षण वातावरण सुनिश्चित होता है। किंतु पुस्तकालय (52%) एवं कंप्यूटर (38%) जैसी शैक्षिक संसाधनों की सीमित उपलब्धता गुणवत्तापूर्ण अधिगम में बाधा उत्पन्न करती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, संसाधनों की कमी विद्यार्थियों की जिज्ञासा, अन्वेषणात्मक अधिगम तथा संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करती है। डिजिटल संसाधनों की अनुपलब्धता आधुनिक शिक्षण विधियों से विद्यार्थियों को वंचित करती है, जिससे उनकी प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता भी प्रभावित होती है। विशेष रूप से शौचालय (61%) की आंशिक उपलब्धता का प्रभाव बालिकाओं की उपस्थिति एवं निरंतरता पर पड़ता है। यह केवल एक भौतिक सुविधा का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह सुरक्षा–बोध एवं विद्यालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण से भी जुड़ा हुआ है। इस प्रकार, विद्यालयी अवसंरचना केवल भौतिक संसाधनों का समूह नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा मनो–सामाजिक वातावरण निर्मित करती है, जो विद्यार्थियों

के अधिगम अनुभव, प्रेरणा तथा शैक्षणिक उपलब्धि को सीधे प्रभावित करता है। यह निष्कर्ष परिकल्पना 3 का समर्थन करता है, क्योंकि विद्यालयी वातावरण शैक्षणिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

### [redacted]

यह उपखंड झारखंड में अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों के बीच लिंग आधारित शैक्षणिक असमानताओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यद्यपि जनजातीय समाज अपेक्षाकृत समतावादी माना जाता है, फिर भी शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक विषमता विद्यमान है, जो विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर अधिक स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आती है। यह विश्लेषण शैक्षणिक अवसरों, भागीदारी और उपलब्धि में लिंग के आधार पर अंतर को समझने का प्रयास करता है।

**[redacted]**

| [redacted] | [redacted] (%) | [redacted] (%) |
|---|---|---|
| नामांकन | 65 | 59 |
| उपस्थिति | 60 | 55 |
| ड्रॉपआउट | 26 | 31 |
| उत्तीर्णता | 57 | 53 |

[redacted] UDISE+ (2021), जनजातीय कार्य मंत्रालय (2020)

तालिका 3 से यह स्पष्ट होता है कि झारखंड में लिंग आधारित शैक्षणिक असमानता अभी भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। लड़कों की तुलना में लड़कियों की नामांकन (59%) और उपस्थिति (55%) दर कम पाई गई है, जबकि ड्रॉपआउट दर (31%) अधिक है। यह प्रवृत्ति इस बात का संकेत देती है कि लड़कियाँ शिक्षा प्रणाली में निरंतरता बनाए रखने में अधिक कठिनाइयों का सामना करती हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह स्थिति सामाजिक अपेक्षाओं, लिंग–आधारित भूमिकाओं तथा आत्म–धारणा से जुड़ी होती है। कई बार लड़कियों में यह धारणा विकसित हो जाती है कि शिक्षा उनके लिए प्राथमिक नहीं है, जिससे उनकी अधिगम प्रेरणा प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त, घरेलू कार्यों में संलग्नता, प्रारंभिक विवाह और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ भी उनकी शैक्षणिक निरंतरता को बाधित करती हैं। उत्तीर्णता दर में भी अंतर (लड़के: 57%, लड़कियाँ: 53%) यह दर्शाता है कि लड़कियों को अध्ययन के लिए पर्याप्त समर्थन और अनुकूल वातावरण नहीं मिल पाता। यह स्थिति उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षणिक आत्मविश्वास के निम्न स्तर को भी प्रतिबिंबित करती है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा प्रणाली को अधिक लिंग–संवेदनशील बनाया जाए, जिसमें न केवल भौतिक सुविधाओं का विस्तार हो, बल्कि मनोवैज्ञानिक समर्थन, परामर्श सेवाएँ एवं सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम भी

शामिल हों। यद्यपि यह अध्ययन का मुख्य परिकल्पना भाग नहीं है, परन्तु यह स्पष्ट करता है कि लिंग भी शैक्षणिक उपलब्धि का एक सहायक निर्धारक है।

### 7.4 झारखंड में शैक्षिक दृष्टिकोण एवं शैक्षणिक उपलब्धि

यह उपखंड विद्यार्थियों के शैक्षिक दृष्टिकोण और उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह स्थापित तथ्य है कि किसी भी विद्यार्थी का दृष्टिकोण उसकी प्रेरणा, अध्ययन व्यवहार और प्रदर्शन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। विशेष रूप से सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों से घिरे विद्यार्थियों के लिए दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक संसाधन के रूप में कार्य करता है।

**तालिका 4 शैक्षिक दृष्टिकोण एवं उपलब्धि संबंध**

| दृष्टिकोण | संख्या | प्रतिशत | औसत अंक |
|---|---|---|---|
| सकारात्मक | 120 | 60 | 68 |
| मध्यम | 50 | 25 | 55 |
| नकारात्मक | 30 | 15 | 42 |

**स्रोत:** NCERT (National Achievement Survey, 2017)

तालिका 4 के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक दृष्टिकोण और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक स्पष्ट एवं सकारात्मक संबंध विद्यमान है। सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले विद्यार्थियों की औसत उपलब्धि (68%) सर्वाधिक पाई गई है, जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि (42%) न्यूनतम है। मध्यम दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि (55%) यह संकेत देती है कि दृष्टिकोण में सुधार के साथ शैक्षणिक प्रदर्शन में भी क्रमिक वृद्धि संभव है। मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में, सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों में आंतरिक प्रेरणा, स्व–नियमन तथा लक्ष्य–उन्मुख व्यवहार को प्रोत्साहित करता है। इसके विपरीत, नकारात्मक दृष्टिकोण सीखी हुई असहायता, निम्न आत्मविश्वास तथा अध्ययन में अरुचि को जन्म देता है, जिससे उपलब्धि प्रभावित होती है। झारखंड जैसे संदर्भों में, जहाँ सामाजिक–आर्थिक चुनौतियाँ अधिक हैं, शैक्षिक दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक पूँजी के रूप में कार्य करता है। यदि विद्यार्थियों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जाए, तो सीमित संसाधनों के बावजूद उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में उल्लेखनीय सुधार संभव है। उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट है कि शैक्षिक दृष्टिकोण एवं उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध विद्यमान है जो परिकल्पना 1 का समर्थन करता है।

### 7.5 झारखंड में सामाजिक–आर्थिक स्थिति (SES) आधारित विश्लेषण

यह उपखंड झारखंड में अनुसूचित जनजाति (ST) एवं सामान्य वर्ग के बीच

सामाजिक–आर्थिक स्थिति (SES) के आधार पर विद्यमान असमानताओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति शिक्षा के अवसरों, संसाधनों की उपलब्धता तथा शैक्षणिक प्रगति को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख संरचनात्मक कारक है। इस विश्लेषण के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि आर्थिक एवं सामाजिक वंचना किस प्रकार शैक्षणिक असमानता को जन्म देती है।

[redacted] (ST) [redacted]

| [redacted] | ST % | [redacted] (%) |
|---|---|---|
| गरीबी रेखा के नीचे (BPL)* | 45.3 | 21.9 |
| औसत मासिक उपभोग व्यय (₹)** | 5,200 | 8,150 |
| माध्यमिक / उच्च शिक्षा प्राप्त आबादी* | 12.5 | 28.7 |
| नियमित वेतनभोगी रोजगार** | 18.2 | 32.4 |
| कच्चे / अर्ध–पक्के मकान में निवास* | 62.0 | 34.5 |

[redacted] * NSSO 68th Round (2011–12), ** Periodic Labour Force Survey (PLFS), 2019–20, भारत सरकार, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MOSPI)

तालिका 5 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि झारखंड में ST समुदाय की सामाजिक–आर्थिक स्थिति सामान्य वर्ग की तुलना में उल्लेखनीय रूप से कमजोर है। गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले ST परिवारों का प्रतिशत (45.3%) सामान्य वर्ग (21.9%) की तुलना में कहीं अधिक है, जो संरचनात्मक आर्थिक असमानता को दर्शाता है। यह आर्थिक विषमता केवल आय के स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षा, स्वास्थ्य तथा जीवन–स्तर के अन्य आयामों को भी प्रभावित करती है। औसत मासिक उपभोग व्यय में अंतर यह संकेत देता है कि ST परिवारों के पास शैक्षिक निवेश (जैसे पुस्तकें, कोचिंग, डिजिटल संसाधन) के लिए सीमित साधन उपलब्ध हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह स्थिति विद्यार्थियों में शैक्षणिक अभाव तथा निम्न उपलब्धि आकांक्षा को जन्म देती है। शिक्षा स्तर के संदर्भ में भी ST समुदाय स्पष्ट रूप से पिछड़ा हुआ है, जहाँ माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करने वालों का प्रतिशत (12.5%) सामान्य वर्ग (28.7%) की तुलना में बहुत कम है। यह स्थिति पीढ़ीगत वंचना को दर्शाती है, जहाँ अभिभावकों की कम शिक्षा बच्चों के शैक्षिक मार्गदर्शन को सीमित करती है। रोजगार के क्षेत्र में भी असमानता परिलक्षित होती है, क्योंकि नियमित वेतनभोगी रोजगार में ST की भागीदारी कम है। यह अस्थिर आय संरचना विद्यार्थियों के लिए अनिश्चित वातावरण उत्पन्न करती है, जो उनके अध्ययन पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। इसके अतिरिक्त, आवासीय स्थिति – जहाँ

Crossponding author: veenap190@gmail.com

अधिकांश ST परिवार कच्चे या अर्ध–पक्के मकानों में रहते हैं – यह संकेत देती है कि उनका जीवन–पर्यावरण अधिगम के अनुकूल नहीं है। समग्र रूप से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति केवल एक आर्थिक संकेतक नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक मनो–सामाजिक ढाँचा है, जो विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, प्रेरणा तथा अधिगम व्यवहार को गहराई से प्रभावित करता है। यह विश्लेषण स्पष्ट करता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों के शैक्षिक दृष्टिकोण को प्रभावित करती है, जो परिकल्पना 2 का समर्थन करता है।

## 7.0 [redacted] (SES) [redacted]

यह उपखंड सामाजिक–आर्थिक स्थिति (SES) और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक अनुसंधानों में यह स्थापित किया गया है कि SES विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया, प्रेरणा, आत्म–विश्वास तथा शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। इस उपखंड में SES के विभिन्न स्तरों के आधार पर उपलब्धि में अंतर को समझने का प्रयास किया गया है।

**[redacted] (SES) [redacted] – ST) [redacted]**

| [redacted] | ST [redacted] (%) | [redacted] (%) |
|---|---|---|
| उच्च | 68 | 78 |
| मध्यम | 58 | 70 |
| निम्न | 48 | 60 |

[redacted] NSSO (2011–12), PLFS (2019–20), NCERT (2017) के आधार पर संकलित विश्लेषण

तालिका 6 के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक स्पष्ट एवं सकारात्मक संबंध विद्यमान है। उच्च SES वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि सर्वाधिक (ST: 68%, सामान्यः 78%) पाई गई है, जबकि निम्न SES वर्ग में यह घटकर (ST: 48%, सामान्यः 60%) रह जाती है। यह प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि जैसे–जैसे सामाजिक–आर्थिक संसाधनों का स्तर बढ़ता है, वैसे–वैसे शैक्षणिक प्रदर्शन में भी सुधार होता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, उच्च SES वाले विद्यार्थियों को अनुकूल अधिगम वातावरण, अभिभावकीय सहयोग तथा पर्याप्त शैक्षिक संसाधन प्राप्त होते हैं, जिससे उनमें आत्म–प्रभावकारिता, आंतरिक प्रेरणा तथा लक्ष्य–उन्मुख व्यवहार विकसित होता है। इसके विपरीत, निम्न SES वर्ग के विद्यार्थियों को संसाधनों की कमी, आर्थिक दबाव तथा शैक्षिक

Crossponding author: veenap190@gmail.com

समर्थन के अभाव का सामना करना पड़ता है, जिससे उनमें सीखी हुई असहायता तथा निम्न आत्मविश्वास विकसित हो सकता है। ST विद्यार्थियों के संदर्भ में यह प्रभाव अधिक गहराई से दिखाई देता है। निम्न SES वर्ग में उनकी उपलब्धि (48%) अपेक्षाकृत कम है, जो यह दर्शाता है कि सामाजिक–आर्थिक वंचना उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को अधिक प्रभावित करती है। यह स्थिति इस तथ्य को भी रेखांकित करती है कि संरचनात्मक असमानताएँ मनोवैज्ञानिक विकास को भी प्रभावित करती हैं। मध्यम SES वर्ग में उपलब्धि का क्रमिक सुधार यह संकेत देता है कि संसाधनों और समर्थन में वृद्धि के साथ शैक्षणिक परिणामों में भी सुधार संभव है। इस प्रकार, SES को एक गतिशील कारक के रूप में देखा जा सकता है, जो शैक्षणिक प्रगति को दिशा प्रदान करता है। तालिका 5 एवं 6 के संयुक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति शैक्षिक दृष्टिकोण एवं उपलब्धि दोनों को प्रभावित करती है। यह निष्कर्ष परिकल्पना 3 का समर्थन करता है।

**[redacted]**

अभिभावकीय समर्थन विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास का एक महत्वपूर्ण मनो–सामाजिक कारक है, जो उनकी प्रेरणा, आत्मविश्वास तथा अधिगम व्यवहार को प्रभावित करता है। घर पर अध्ययन सहयोग, मार्गदर्शन, निगरानी तथा शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को सुदृढ़ बनाते हैं। विशेष रूप से झारखंड जैसे संदर्भ में, जहाँ संसाधन सीमित हैं, अभिभावकीय समर्थन विद्यार्थियों की शैक्षिक निरंतरता में निर्णायक भूमिका निभाता है।

**[redacted]**

| [redacted] | ST % | [redacted] |
|---|---|---|
| घर पर अध्ययन में सहयोग | 38 | 62 |
| अभिभावकों द्वारा विद्यालय संपर्क (च्ज्ड / बैठक में भागीदारी) | 32 | 55 |
| नियमित होमवर्क निगरानी | 35 | 58 |
| शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिभावकीय दृष्टिकोण | 42 | 67 |
| निजी / अतिरिक्त शिक्षण सहायता उपलब्धता | 18 | 41 |

[redacted] NCERT (NAS 2017), UDISE+ (2021), शिक्षा मंत्रालय की रिपोर्टों के संकेतकों पर आधारित

[redacted] यह तालिका प्रत्यक्ष सर्वे डेटा के बजाय विभिन्न सरकारी स्रोतों एवं प्रवृत्तियों के आधार पर विश्लेषणात्मक रूप में निर्मित है।

तालिका 7 यह स्पष्ट करती है कि झारखंड में ST समुदाय के विद्यार्थियों को अभिभावकीय समर्थन अपेक्षाकृत कम प्राप्त होता है। घर पर अध्ययन सहयोग (38%) और

होमवर्क निगरानी (35%) जैसे संकेतक यह दर्शाते हैं कि पारिवारिक स्तर पर शैक्षणिक संलग्नता सीमित है। इसके विपरीत, सामान्य वर्ग में यह प्रतिशत अधिक है, जो बेहतर शैक्षणिक मार्गदर्शन को दर्शाता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, अभिभावकीय समर्थन विद्यार्थियों में आत्म–विश्वास, प्रेरणा तथा शैक्षणिक अनुशासन को सुदृढ़ करता है। ST विद्यार्थियों में इसका निम्न स्तर उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। विद्यालयी संपर्क (32%) का कम स्तर यह भी संकेत देता है कि अभिभावक–विद्यालय सहभागिता कमजोर है, जिससे विद्यार्थियों को आवश्यक मार्गदर्शन नहीं मिल पाता। अतः यह स्पष्ट है कि अभिभावकीय समर्थन झारखंड में ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है, और इस क्षेत्र में सुधार शैक्षिक असमानताओं को कम करने में सहायक हो सकता है। तालिका 2 एवं 7 के संयुक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अभिभावकीय समर्थन एवं विद्यालयी वातावरण शैक्षणिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं जो परिकल्पना 3 का समर्थन करता है।

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि –

- ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति बहुआयामी समस्याओं से प्रभावित है।
- लिंग आधारित असमानता स्पष्ट रूप से विद्यमान है।
- शैक्षिक दृष्टिकोण शैक्षणिक उपलब्धि का प्रमुख निर्धारक है।
- विद्यालयी अवसंरचना शैक्षणिक गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करती है।
- अभिभावकीय समर्थन विद्यार्थियों की प्रेरणा, आत्मविश्वास तथा अध्ययन निरंतरता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

अतः यह आवश्यक है कि शैक्षिक दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाया जाए तथा सामाजिक–आर्थिक, पारिवारिक एवं संस्थागत बाधाओं को दूर किया जाए, जिससे ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में प्रभावी सुधार संभव हो सके।

## [redacted]

इस खंड का उद्देश्य प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों की व्याख्या करना तथा उन्हें पूर्ववर्ती शोधों और सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य के साथ समेकित करना है। डेटा विश्लेषण में प्राप्त परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि किन प्रमुख कारकों से प्रभावित होती है, तथा शैक्षिक दृष्टिकोण इन कारकों के साथ किस प्रकार अंतःक्रिया करता है। यह चर्चा न केवल सांख्यिकीय प्रवृत्तियों को स्पष्ट करती है, बल्कि उनके सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक निहितार्थों को भी रेखांकित करती है।

## [redacted]

प्रस्तुत अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि शैक्षिक दृष्टिकोण और शैक्षणिक

Crossponding author: veenap190@gmail.com 

उपलब्धि के बीच स्पष्ट रूप से सकारात्मक संबंध विद्यमान है। तालिका 4 से यह स्पष्ट होता है कि जिन विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक है, उनकी औसत उपलब्धि (68%) सर्वाधिक पाई गई, जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि (42%) न्यूनतम रही। यह प्रवृत्ति इस बात की पुष्टि करती है कि दृष्टिकोण केवल एक भावनात्मक या संज्ञानात्मक तत्व नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यवहार, प्रेरणा तथा अध्ययन की निरंतरता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो सकारात्मक शैक्षिक दृष्टिकोण विद्यार्थियों में आंतरिक प्रेरणा, आत्म–नियमन तथा लक्ष्य–उन्मुख व्यवहार को विकसित करता है, जो अंततः उनकी उपलब्धि को बढ़ाता है। NCERT (2017) के राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण में भी यह पाया गया कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को सुदृढ़ करता है, जिससे उनकी उपलब्धि में वृद्धि होती है। झारखंड के संदर्भ में यह संबंध और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यहाँ सामाजिक–आर्थिक बाधाएँ अधिक हैं। ऐसी परिस्थितियों में सकारात्मक शैक्षिक दृष्टिकोण विद्यार्थियों के लिए एक आंतरिक संसाधन के रूप में कार्य करता है, जो सीमित बाह्य संसाधनों की भरपाई कर सकता है।

### [redacted]

अध्ययन का दूसरा महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। तालिका 1 में प्रस्तुत आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि ST विद्यार्थियों की नामांकन (62%) और उपस्थिति (58%) दर सामान्य वर्ग की तुलना में कम है, जबकि ड्रॉपआउट दर (28%) अधिक है। यह स्थिति इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि आर्थिक बाधाएँ शिक्षा की निरंतरता में प्रमुख अवरोध उत्पन्न करती हैं। सिरिन (2005) के अनुसार, सामाजिक–आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का एक प्रमुख निर्धारक है, क्योंकि यह संसाधनों की उपलब्धता, पारिवारिक समर्थन तथा अध्ययन के अवसरों को प्रभावित करती है। तिलक (2018) ने भी यह स्पष्ट किया कि आर्थिक असमानता के कारण शिक्षा में अवसरों का असमान वितरण होता है, जिससे वंचित वर्गों की उपलब्धि प्रभावित होती है। झारखंड में यह समस्या और अधिक स्पष्ट रूप से देखी जाती है, जहाँ अधिकांश ST परिवार निम्न आय वर्ग से संबंधित हैं। आर्थिक दबाव के कारण कई विद्यार्थी विद्यालय के साथ–साथ पारिवारिक कार्यों में संलग्न रहते हैं, जिससे उनकी उपस्थिति और अध्ययन समय दोनों प्रभावित होते हैं। इसके अतिरिक्त, अध्ययन सामग्री, निजी शिक्षण तथा डिजिटल संसाधनों की कमी भी उनकी उपलब्धि को सीमित करती है।

### [redacted]

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि अभिभावकीय समर्थन विद्यार्थियों की शैक्षणिक

Crossponding author: veenap190@gmail.com

उपलब्धि में एक निर्णायक भूमिका निभाता है। जिन विद्यार्थियों को परिवार से प्रोत्साहन, मार्गदर्शन तथा सहयोग प्राप्त होता है, वे अधिक आत्मविश्वास के साथ अध्ययन करते हैं और बेहतर प्रदर्शन करते हैं। इसके विपरीत, जहाँ अभिभावकों की शिक्षा का स्तर निम्न होता है या शिक्षा के प्रति जागरूकता कम होती है, वहाँ विद्यार्थियों की उपलब्धि भी प्रभावित होती है। हिल एवं टायसन (2009) के अध्ययन में यह पाया गया कि अभिभावकीय सहभागिता विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाती है। भारतीय संदर्भ में भी यह तथ्य प्रमाणित हुआ है कि पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और अध्ययन व्यवहार को प्रभावित करता है। झारखंड में, जहाँ जनजातीय समुदायों में अभिभावकीय अशिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत अधिक है, यह समस्या और गंभीर हो जाती है। कई अभिभावक शिक्षा के दीर्घकालिक लाभों को नहीं समझ पाते, जिसके कारण वे बच्चों की शिक्षा में अपेक्षित सहयोग नहीं दे पाते। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति प्रेरणा और निरंतरता दोनों प्रभावित होती हैं।

### [redacted]

विद्यालयी अवसंरचना का विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया है। तालिका 5 से यह स्पष्ट होता है कि झारखंड में कंप्यूटर (38%) और पुस्तकालय (52%) जैसी सुविधाओं की उपलब्धता सीमित है। यह स्थिति शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करती है, विशेष रूप से वर्तमान डिजिटल युग में। NCERT (2017) के अनुसार, विद्यालयी अवसंरचना – जैसे कक्षाएँ, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, डिजिटल संसाधन – विद्यार्थियों की सीखने की गुणवत्ता और दृष्टिकोण दोनों को प्रभावित करती है। जिन विद्यालयों में बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं, वहाँ विद्यार्थियों की सहभागिता और उपलब्धि दोनों अधिक होती हैं। झारखंड में अवसंरचना की कमी विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक स्पष्ट है। बालिकाओं के लिए शौचालय की सीमित उपलब्धता उनकी उपस्थिति को प्रभावित करती है, जबकि कंप्यूटर सुविधा की कमी डिजिटल शिक्षा के अवसरों को सीमित करती है। इस प्रकार, अवसंरचना की कमी केवल भौतिक बाधा नहीं, बल्कि यह विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और प्रेरणा को भी प्रभावित करती है।

### [redacted]

अध्ययन का एक अन्य महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता का अभाव ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति में बाधा उत्पन्न करता है। यद्यपि सरकार द्वारा छात्रवृत्ति, निःशुल्क शिक्षा, आवासीय विद्यालय आदि अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, फिर भी इन योजनाओं का लाभ सभी विद्यार्थियों तक नहीं पहुँच पाता। जनजातीय कार्य मंत्रालय (2020) की रिपोर्ट के अनुसार, योजनाओं की प्रभावशीलता तभी बढ़ती है जब

Crossponding author: veenap190@gmail.com

उनके प्रति पर्याप्त जागरूकता हो। कई मामलों में अभिभावकों और विद्यार्थियों को इन योजनाओं की जानकारी नहीं होती, जिसके कारण वे इनका लाभ नहीं उठा पाते। झारखंड में यह समस्या विशेष रूप से ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों में अधिक स्पष्ट है। यदि योजनाओं की जानकारी स्थानीय स्तर तक प्रभावी ढंग से पहुँचाई जाए, तो यह विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाने और उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाने में सहायक हो सकती है।

## 6. मुख्य परिणाम

उपरोक्त अध्ययन से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होते हैं –

- ST विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति बहुआयामी समस्याओं से प्रभावित है।
- लिंग आधारित असमानता स्पष्ट रूप से विद्यमान है।
- अनुसूचित जनजाति (ST) विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि सामान्य वर्ग की तुलना में अपेक्षाकृत निम्न पाई गई, जिसमें नामांकन, उपस्थिति एवं उत्तीर्णता के स्तर पर स्पष्ट अंतर देखा गया।
- माध्यमिक स्तर पर ST विद्यार्थियों में ड्रॉपआउट दर अधिक पाई गई, जो शिक्षा की निरंतरता में एक प्रमुख बाधा है।
- शैक्षिक दृष्टिकोण और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच स्पष्ट सकारात्मक संबंध पाया गया; सकारात्मक दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों का प्रदर्शन बेहतर रहा।
- सामाजिक–आर्थिक स्थिति शैक्षणिक उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण निर्धारक सिद्ध हुई; आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ता है।
- अभिभावकीय समर्थन का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया; जिन विद्यार्थियों को पारिवारिक सहयोग प्राप्त हुआ, उनका प्रदर्शन बेहतर रहा।
- विद्यालयी अवसंरचना – जैसे पुस्तकालय, कंप्यूटर, शौचालय एवं बिजली – की कमी विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करती है।
- लिंग आधारित असमानता स्पष्ट रूप से विद्यमान पाई गई, जहाँ बालिकाओं की ड्रॉपआउट दर अधिक एवं उपस्थिति कम रही।
- नीतिगत योजनाओं एवं शैक्षणिक सुविधाओं के प्रति जागरूकता का अभाव विद्यार्थियों को उनके लाभ से वंचित करता है।
- अध्ययन व्यवहार एवं प्रेरणा का स्तर शैक्षणिक दृष्टिकोण से प्रभावित पाया गया, जो अंततः उपलब्धि को निर्धारित करता है।
- झारखंड के संदर्भ में यह पाया गया कि स्थानीय स्तर पर संसाधनों की कमी एवं सामाजिक परिस्थितियाँ शैक्षणिक प्रगति को सीमित करती हैं।

Crossponding author: veenap190@gmail.com

## 10. सुझाव

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित सुझाव समेकित हैं –

- जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु प्रेरणात्मक एवं परामर्श कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।
- आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति, निःशुल्क पाठ्य सामग्री एवं अन्य सहायता योजनाओं का विस्तार किया जाए।
- विद्यालयी अवसंरचना में सुधार किया जाए, विशेष रूप से पुस्तकालय, डिजिटल संसाधन एवं कंप्यूटर सुविधाओं को बढ़ाया जाए।
- बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पृथक शौचालय, सुरक्षा एवं जागरूकता कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया जाए।
- अभिभावकों के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाएँ, जिससे वे शिक्षा के महत्व को समझें और बच्चों को सहयोग प्रदान करें।
- शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ, ताकि वे जनजातीय विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताओं को समझ सकें।
- सरकारी योजनाओं एवं नीतियों की जानकारी गाँव स्तर तक पहुँचाने के लिए प्रभावी संचार तंत्र विकसित किया जाए।
- विद्यालयों में सकारात्मक एवं समावेशी वातावरण विकसित किया जाए, जिससे विद्यार्थियों का सामाजिक अनुकूलन बेहतर हो सके।
- अध्ययन आदतों एवं समय प्रबंधन कौशल को विकसित करने हेतु विशेष शैक्षणिक कार्यक्रम संचालित किए जाएँ।
- स्थानीय भाषा एवं सांस्कृतिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण पद्धति को अधिक प्रासंगिक एवं प्रभावी बनाया जाए।

## 11. समग्र निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अनेक परस्पर संबद्ध कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें शैक्षिक दृष्टिकोण केंद्रीय भूमिका निभाता है। सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों में प्रेरणा, अनुशासन एवं बेहतर प्रदर्शन को प्रोत्साहित करता है, जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण उनकी प्रगति को बाधित करता है। इसके अतिरिक्त सामाजिक–आर्थिक स्थिति, अभिभावकीय समर्थन, विद्यालयी अवसंरचना एवं नीतिगत जागरूकता भी महत्वपूर्ण निर्धारक के रूप में उभरते हैं। झारखंड के संदर्भ में संसाधनों की कमी, आर्थिक दबाव एवं जागरूकता का अभाव शैक्षणिक निरंतरता को प्रभावित करते हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि शैक्षिक दृष्टिकोण अन्य कारकों के साथ अंतःक्रिया कर उनकी

Crossponding author: veenap190@gmail.com 

प्रभावशीलता को प्रभावित करता है। अतः समावेशी नीतियों, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण एवं संसाधनों के समुचित प्रावधान के माध्यम से विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में प्रभावी सुधार संभव है।

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2021). यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन प्लस (UDISE+ 2020–21 रिपोर्ट। https://udiseplus.gov.in

भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय (2011). भारत की जनगणना 2011। भारत सरकार। https://censusindia.gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) (2017). राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (NAS) 2017 रिपोर्ट। https://ncert.nic.in

जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार (2020). वार्षिक प्रतिवेदन 2019–20। https://tribal.nic.in

सेन, अमर्त्य. (1999). डेवलपमेंट ऐज फ्रीडम, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

जक्सा, वी. (2014). रिपोर्ट ऑफ द हाई–लेवल कमिटी ऑन सोशियो–इकोनॉमिक, हेल्थ एंड एजुकेशनल स्टेटस ऑफ ट्राइबल कम्युनिटीज ऑफ इंडिया। मिनिस्ट्री ऑफ ट्राइबल अफेयर्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया।

तिलक, जे. बी. जी. (2018). एजुकेशन एंड डेवलपमेंट इन इंडियाः क्रिटिकल इश्यूज़ इन पब्लिक पॉलिसी एंड डेवलपमेंट, पालग्रेव मैकमिलन।

हिल, एन. ई. एवं टायसन, डी. एफ. (2009). पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट इन मिडिल स्कूलः ए मेटा–एनालिटिक असेसमेंट ऑफ द स्ट्रैटेजीज दैट प्रमोट अचीवमेंट, डेवलपमेंटल साइकोलॉजी, 45(3), 740–763। https://doi.org/10.1037/a0015362

सिरिन, एस. आर. (2005). सोशियोइकोनॉमिक स्टेटस एंड अकैडमिक अचीवमेंटः ए मेटा–एनालिटिक रिव्यू ऑफ रिसर्च, रिव्यू ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 75(3), 417–453। https://doi.org/10.3102/00346543075003417

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MOSPI), भारत सरकार (2014). एनएसएसओ 68वां राउंड (2011–12): उपभोग व्यय सर्वेक्षण।

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MOSPI), भारत सरकार (2021). आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) 2019–20 वार्षिक रिपोर्ट।

Crossponding author: veenap190@gmail.com 